राकेश पाण्डेय सहायक अध्यापक
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तडेमियॉ
मूनाकोट, पिथौरागढ़

पाठ–6

जनसंख्या

क्या हम ऐसे विश्व की कल्पना कर सकते हैं कि जिसमें कोई भी मानव नहीं रहता हो ? बिना मानव के विश्व के समस्त संसाधनों का उपयोग कौन करेगा ? क्या ऐसी स्थिति में प्रकृति में पाए जाने वाले विभिन्न संसाधनों का कितना महत्व रह जाऐगा ?

मानव विभिन्न गुणों से परिपूर्ण वह महत्वपूर्ण संसाधन है जो अनेक संसाधनों का निर्माण एवं उपयोग करता है। विभिन्न प्राकृतिक घटनाऐं भी तभी 'आपदा' कहलाती हैं जब वो किसी मानव आबादी या संपत्ति को नुकसान पहुचाए। इसलिए सामाजिक अध्ययन में जनसंख्या को एक आधारी तत्व माना जाता है क्योंकि जनसंख्या से ही दूसरे तत्वों का अवलोकन किया जाता है।

मानव पृथ्वी में पाए जाने वाले संसाधनों का उत्पादन एवं उपभोग करता है। इसलिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि एक क्षेत्र, राज्य या देश में कितने लोग निवास करते हैं, वे कहॉ एवं कैसे रहते हैं, उनकी संख्याओं में वृद्धि क्यों हो रही है, उनकी क्या–क्या विशेषताऍ हैं। *किसी क्षेत्र, राज्य, देश या विश्व में रहने वाले लोगों की कुल संख्या को* **जनसंख्या** कहा जाता है। *प्रत्येक देश में रहने वाले लोगों की एक निश्चित समय के बाद आधिकारिक गणना की जाती है जिसे* ***जनगणना*** कहा जाता है। भारत में सर्वप्रथम 1872 में जनगणना की गई थी। परन्तु पहली बार 1881 में संपूर्ण जनगणना की गई। तभी से प्रत्येक 10 वर्ष बाद यह गणना की जाती है। भारत में अन्तिम बार सन 2011 में आधिकारिक जनगणना हुई, और अगली जनगणना सन 2021 में की जाएगी।

इस अध्याय में जनसंख्या से संबधित निम्न प्रश्नों पर विचार किया जाएगा।–

01. **जनसंख्या का आकार एवं वितरण**– इसके अन्तर्गत विश्व में लोगों की संख्या, हमारे देश व राज्यों की जनसंख्या तथा देश व राज्यों के जनसंख्या घनत्व व जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया जाएगा।
02. **जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या परिवर्तन की प्रक्रिया**–इसके अन्तर्गत जनसंख्या में समय के अनुसार वृद्धि एवं जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन किया जाएगा।
03. **जनसंख्या के गुण व विशेषताऍ**– इसके अन्तर्गत लिंगानुपात, साक्षरता दर, व्यावसायिक संरचना तथा स्वास्थ्य की अवस्था के विषय में जाना जाएगा।

हमनें क्या सीखा पता लगाऐं–

प्रश्न 1– जनसंख्या और जनगणना को परिभाषित कीजिए।

प्रश्न 2– भारत में सर्वप्रथम संपूर्ण जनगणना कब की जा सकी ?

प्रश्न 3– भारत में कितने वर्षो बाद जनगणना की जाती है ?

जनसंख्या का आकार एवं वितरण

2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या लगभग **1 अरब 21करोड** थी यही जनसंख्या 2001 में लगभग **1 अरब 2 करोड 80 लाख** थी इस प्रकार एक दशक में भारत की जनसंख्या लगभग 18 करोड 21 लाख बडी। 2011 की जनसंख्या कुल विश्व की जनसंख्या का लगभग 17.4 प्रतिशत है। ये 1अरब 21 करोड की जनसंख्या भारत में 32.8 लाख वर्ग कि0मी0 (विश्व के स्थलीय भू–भाग का 2.4 प्रतिशत) के क्षेत्र में असमान रुप से वितरित हैं।(चित्र)

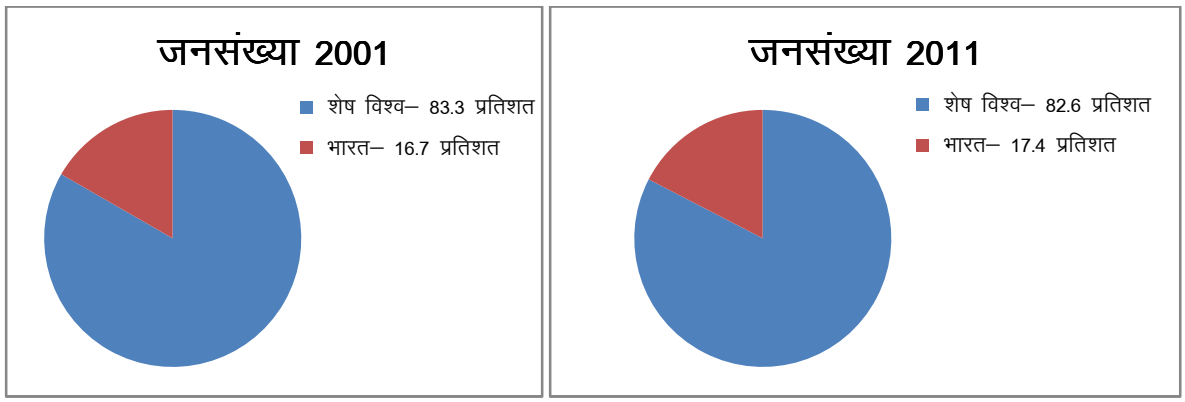

2001 की जनगणना के अनुसार देश की सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रेदश था। 2011 की जनगणना के अनुसार भी देश की सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश ही है परन्तु 2001 में उत्तर प्रदेश की कुल जनसंख्या जहॉ 1660 लाख थी वह 2011 में बढकर 1998 लाख हो गई है। इस प्रकार 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में देश की कुल जनसंख्या का लगभग 16.5 प्रतिशत भाग निवास करता है। इसी के

विपरीत हिमालय क्षेत्र के राज्य सिक्किम की कुल आबादी केवल 6 लाख 10 हजार(लगभग) है। जिसमें देश की कुल जनसंख्या का मात्र .05 प्रतिशत भाग ही निवास करता है।

भारत की लगभग 55 प्रतिशत आबादी देश के छः राज्यों में निवास करती है। ये राज्य हैं– उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, प0बंगाल, आन्ध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश।

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है जहॉ देश की मात्र 5.66 प्रतिशत जनसंख्या ही निवास करती है।

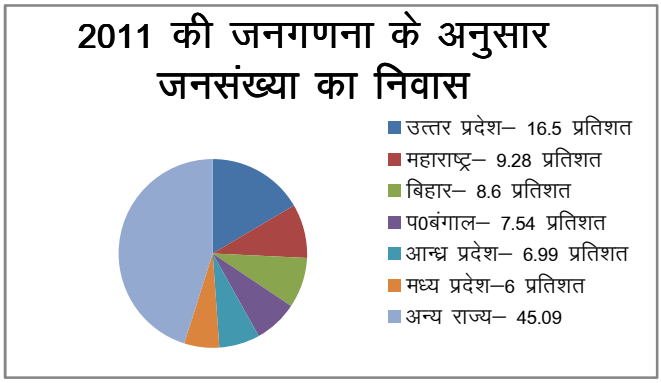

हमनें क्या सीखा पता लगाऐं–

प्रश्न 1– 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या कितनी है ?

प्रश्न 2– उन राज्यों के नाम बताइये जिनमें देश की 55 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है ?

जनसंख्या घनत्व के आधार पर भारत में जनसंख्या वितरण

प्रति ईकाई क्षेत्रफल में रहने वाले लोगों की संख्या को **जनसंख्या घनत्व** कहा जाता है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत का जनसंख्या घनत्व 324 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 था, परन्तु 2011 की जनगणना के अनुसार भारत का जनसंख्या घनत्व बढकर 382 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 हो गया है।

2001 की जनगणना के अनुसार प0बंगाल का जनसंख्या घनत्व राज्यों में सबसे अधिक 904 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था जबकि 2011 की जनगणना में देश के राज्यों में बिहार का जनसंख्या घनत्व 1102 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 के साथ सबसे अधिक और प0 बंगाल का 1030 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 के साथ दूसरे स्थान पर है।

विभिन्न राज्यों के जनसंख्या घनत्व को वहॉ की मिट्टी, वर्षा, भू आकृति की बनावट बहुत प्रभावित करते हैं। इन भौगोलिक एवं जलवायु सम्बन्धी कारणों के कारण ही देश के जनसंख्या घनत्व में असमानता पाई जाती है। अधिकाश पहाड़ी राज्यों का जनसंख्या घनत्व

विषम भौगोलिक परिस्थितियॉ होने के कारण ही मैदानी एवं समुद्र तटीय क्षेत्रों की तुलना में कम है।

हमनें क्या सीखा पता लगाऐं–

प्रश्न 1– जनसंख्या घनत्व को परिभाषित कीजिए।

प्रश्न 2– किसी स्थान के जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कौन–कौन से कारक हो सकते हैं ?

जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या परिवर्तन की प्रक्रिया

जनसंख्या एक परिवर्तनशील कारक है। इसकी संख्या, वितरण एवं संघटन में परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन तीन प्रक्रियाओं के कारण होता है ये प्रक्रियाऍ हैं–

01 जन्म 02 मृत्यु 03 प्रवास

किसी विशेष समय अंतराल में जैसे 10 वर्षों के भीतर किसी क्षेत्र/राज्य/देश/विश्व के निवासियों की संख्या में परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहा जाता है। जनसंख्या वृद्धि को सापेक्ष वृद्धि एवं वार्षिक वृद्धि दर द्वारा व्यक्त किया जाता है।

जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन की तीन मुख्य प्रक्रियाऍ हैं– जन्म दर, मृत्यु दर एवं प्रवास।

एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों में जितने जीवित बच्चों का जन्म होता है उसे जन्म दर कहा जाता है। भारत में यह वृद्धि का प्रमुख घटक है क्योंकि भारत में हमेशा जन्म दर मृत्यु दर की तुलना में अधिक रही है।

एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों में मरने वालों की संख्या को मृत्यु दर कहा जाता है। मृत्यु दर में गिरावट भी भारत की जनसंख्या वृद्धि का एक मुख्य कारण है।

जनसंख्या में परिवर्तन का एक मुख्य घटक प्रवास है। ***लोगों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में चले जाने को प्रवास*** कहते हैं। प्रवास **आंतरिक**(देश के भीतर) या **अंतर्राष्ट्रीय** (देशों के बीच) हो सकता है। आंतरिक प्रवास जनसंख्या के आकार में कोई परिवर्तन नहीं लाता है लेकिन यह देश के भीतर जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करता है। जबकि अंतर्राष्ट्रीय प्रवास के कारण देश की जनसंख्या बढ या घट सकती है।

हमनें क्या सीखा पता लगाऐं–

प्रश्न 1– भारत में सर्वप्रथम संपूर्ण जनगणना कब की जा सकी ?

प्रश्न 2– जनसंख्या में परिवर्तन की मुख्य प्रक्रियाऍ कौन–कौन सी हैं ?

आयु संरचना

एक व्यक्ति की आयु उसकी इच्छा, खरीददारी तथा काम करने की क्षमता को पर्याप्त रुप से प्रभावित करती है। किसी राष्ट्र की जनसंख्या को सामान्यतः तीन वर्गो(आयु संरचनाओं) में बॉटा जा सकता है।

01 बच्चे(सामान्यतः 15 वर्ष से कम)

02 वयस्क(15 से 59 वर्ष)

03 वृद्ध(59 वर्ष से अधिक)

बच्चे(सामान्यतः 15 वर्ष से कम)

ये आर्थिक रुप से उत्पादनशील नहीं होते हैं तथा इनको भोजन, वस्त्र एवं स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएँ उपलब्ध कराने की आवश्यकता होती है।

वयस्क(15 से 59 वर्ष)

ये आर्थिक रुप से उत्पादनशील होते हैं। ये जनसंख्या का कार्यशील वर्ग है। भारत की जनसंख्या में इसी आयु संरचना के सर्वाधिक लोग निवास करते हैं।

वृद्ध(59 वर्ष से अधिक)

ये आर्थिक रुप से उत्पादनशील या अवकाश प्राप्त हो सकते हैं। ये स्वैच्छिक रुप से कार्य कर सकते हैं।

लिंग अनुपात

प्रति एक हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या को लिंग अनुपात कहा जाता है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार देश का लिंग अनुपात 924 था। 2011 की जनगणना से प्राप्त ऑकड़ो के आधार पर भारत का लिंग अनुपात 940 प्राप्त हुआ है। राज्यों की दृष्टि से देखा जाए तो ***केरल का लिंग अनुपात देश में 2011 की जनगणना के आधार पर सर्वाधिक 1084*** है जो 2001 की जनगणना में 1058 था। इसी प्रकार 2001 की जनगणना के आधार पर राज्यों में हरियाणा का लिंग अनुपात सबसे कम 861 था जो ***2011 के ऑकड़ो के आधार पर 879 प्राप्त हुआ*** है। सन् 1951 से 2011 तक की जनगणना से प्राप्त ऑकड़ों के आधार पर भारत के लिंगनुपात को निम्न सारणी द्वारा समझा जा सकता है।

क्र.सं.	जनगणना वर्ष	लिंग अनुपात (प्रति हजार पुरुषों पर महिलाएँ)
01	1951	946
02	1961	941
03	1971	930

04	1981	934
05	1991	929
06	2001	933
07	2011	940

हमनें क्या सीखा पता लगाऐं–

प्रश्न 1– किसी राष्ट्र की जनसंख्या को सामान्यतः कितने वर्गो में बॉटा जा सकता है ?

प्रश्न 2– लिंग अनुपात से आप क्या समझते हैं ?

साक्षरता दर

साक्षरता किसी भी जनसंख्या के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। एक शिक्षित और जागरुक व्यक्ति ही बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेकर शोध एवं विकास कार्य कर सकता है। ***2001 की जनगणना के अनुसार वह व्यक्ति जिसकी आयु 7 वर्ष या उससे अधिक है और जो किसी भी भाषा को समझकर लिख व पढ़ सकता है उसे साक्षर*** की श्रेणी में रखा जाता है।

भारत की साक्षरता के स्तर में धीरे–धीरे सुधार हो रहा है। इसे निम्न ऑकड़ो की मदद से आसानी से समझा जा सकता है। इसी प्रकार राज्यवार साक्षरता की स्थिति को भी निम्न मानचित्र से समझा जा सकता है।

Year	Male %	Female %	Combined %
1872[5]			~3.25
1881	8.1	0.35	4.32
1891	8.44	0.42	4.62
1901	9.8	0.6	5.4
1911	10.6	1.0	5.9
1921	12.2	1.8	7.2
1931	15.6	2.9	9.5
1941	24.9	7.3	16.1
1951	27.16	8.86	18.33
1961	40.4	15.35	28.3
1971	45.96	21.97	34.45
1981	56.38	29.76	43.57
1991	64.13	39.29	52.21
2001	75.26	53.67	64.83
2011	82.14	65.46	74.04

स्रोत–Wikipedia.org भारत में दशकीय साक्षरता दर

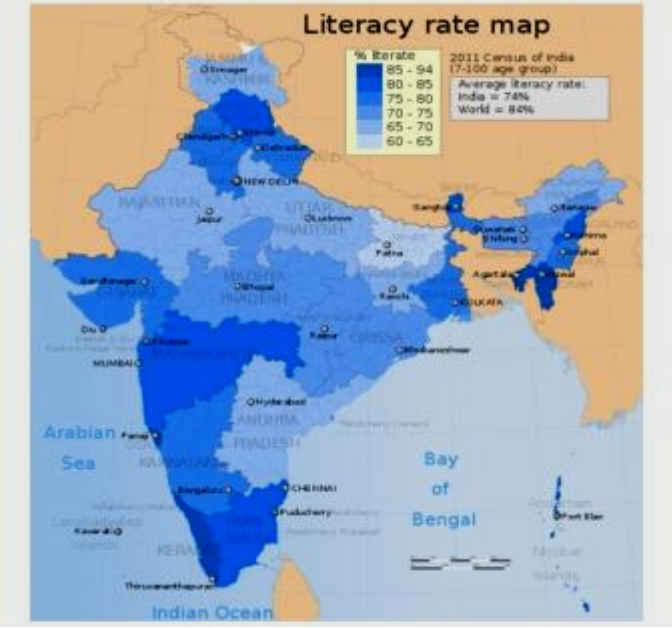

स्रोत–Wikipedia.org भारत साक्षरता की स्थिति 2011 के अनुसार

व्यावसायिक संरचना

विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के अनुसार किए गए जनसंख्या के वितरण को व्यावसायिक संरचना कहा जाता है। देश में विभिन्न प्रकार के व्यवसायों(प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक) में लगे लोग व्यावसायिक संरचना का निर्माण करते हैं। विकसित एवं विकासशील देशों में विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में लगे लोगों का अनुपात अलग–अलग होता है। विकसित देशों में द्वितीयक और तृतीयक व्यवसायों में कार्यशील जनता का अनुपात अधिक होता है। जबकि विकासशील देशों में प्राथमिक क्षेत्र के व्यवसायों में जनसंख्या अधिक कार्यशील होती है। भारत में कुल जनसंख्या का 64 प्रतिशत भाग केवल कृषि कार्य में कार्यरत है जबकि द्वितीय एवं तृतीयक क्षेत्र में कार्यरत लोगों की संख्या का अनुपात क्रमशः 13 तथा 20 प्रतिशत है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य जनसंख्या की संरचना का महत्वपूर्ण घटक है जो कि विकास प्रक्रिया को प्रभावित करता है। भारत की जनसंख्या के स्वास्थ्य स्तर में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है जिसे निम्न आंकडों की मदद से समझा जा सकता है।–

वर्ष	मृत्यु दर (प्रति हजार)	औसत आयु (वर्ष में)
1951	25	36.7
2001	8.1	64.6
2011	7.1	65.48

किशोर जनसंख्या

किशोर जनसंख्या के अन्तर्गत प्रायः 10 से 19 वर्ष की आयु वर्ग के बालक/बालिकाऐं आती हैं। ये जनसंख्या के महत्वपूर्ण भाग हैं क्योंकि भविष्य में ये ही क्रियाशील जनसंख्या के भाग होंगे। अतः इनके स्वास्थ्य एवं शिक्षा की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति

किसी भी राष्ट्र के लिए वहॉ की जनसंख्या एक बहुमूल्य संसाधन है। अतः बढती जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा **सर्वप्रथम 1976 में एक राष्ट्रीय जनसंख्या नीति** लाई गई है। जिसमें बढ़ती जन्म दर को कम करने, शिशु मृत्यु दर को कम करने की बातें कही गई। देश मे जनसंख्या के नियत्रण एवं कल्याण के लिए 1952 में एक व्यापक परिवार नियोजन कार्यक्रम भी प्रारंभ किया गया था।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 की मुख्य बातें निम्न थी।–

01 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाए।

02 शिशु मृत्यु दर को प्रति 1000 में 30 से कम किया जाए।

03 व्यापक स्तर पर टीकारोधी कार्यक्रम चलाकर बीमारियों से बच्चों को छुटकारा दिलाया जाए।

04 बालिकाओं की शादी की उम्र को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 और किशोर

राष्ट्र की प्रगति में किशोर/किशोरियों(10 से 19 वर्ष की आयु वर्ग के बालक/बालिका) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि वे ही भविष्य में देश की भावी क्रियाशील जनसंख्या हैं। अतः इस क्रियाशील जनसंख्या का समुचित विकास हो इसके लिए राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 में इस वय वर्ग के किशोर/किशोरियों के लिए विशेष बातें की गई। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 में इनके लिए किए गए प्राविधान निम्न हैं।–

01 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाए।

02 किशोर/किशोरियों की पौषणिक आवश्यकताओं पर विशेष रुप से बल दिया गया।

03 इस नीति में अवांछित गर्भधारण और यौन– संबधों से प्रसारित बीमारियों से किशोर/किशोरियों की संरक्षा जैसी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं पर जोर दिया गया।

04 नीति में किशोर/किशोरियों को असुरक्षित यौन संबंध के कुप्रभावों के बारे में शिक्षित करने पर बल दिया गया।

05 खाद्य और पौषणिक सेवाएँ उपलब्ध करवाने पर भी नीति में बल दिया गया।

हमनें क्या सीखा पता लगाऐं–

प्रश्न 01 साक्षर शब्द को परिभाषित कीजिए।

प्रश्न 02 सर्वप्रथम राष्ट्रीय जनसंख्या नीति कब लाई गई ?

प्रश्न 03 राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 की मुख्य बातें क्या हैं ?

निम्न संदर्भो द्वारा संकलित एवं ICT कार्य हेतु निःशुल्क प्रसारित

01 विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड कक्षा 09 सामाजिक विज्ञान की पाठ्य पुस्तक(समकालीन भारत–1

02 Wikipedia.org, community.data.gov.in, jagranjosh.com

03 computer hardware and software